Name: _____ Date: _____

## लंका में हनुमान (Page 65)

प्रश्न-1 हनुमान ने सीता के मन की शंका को कैसे दूर किया?

उत्तर _____

_____

प्रश्न-2 किसने किससे कहा?

i. “कहीं सीता मुझे भी राक्षस न समझ लें । मायावी चाल मान लें ।”

_____

ii. “तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं है, सुमुखी!”

_____

iii. “सोच लो, तुम्हारे पास अब केवल दो महीने बचे हैं।”

_____

iv. “ऐसा कभी नहीं होगा, दुष्ट! राम के सामने तुम्हारा अस्तित्व ही क्या है?”

_____

v. “तुम्हें कोई नहीं बचा सकता मूर्ख राक्षस! तुम्हारा अंत निकट है।”

_____

www.educationwithfun.com

## लंका में हनुमान (Page 65)

प्रश्न-1 हनुमान ने सीता के मन की शंका को कैसे दूर किया?

उत्तर हनुमान ने पर्वत पर फेंके आभूषणों की याद दिलाकर सीता के मन के संदेह को दूर किया ।

प्रश्न-2 किसने किससे कहा?

i. "कहीं सीता मुझे भी राक्षस न समझ लें । मायावी चाल मान लें ।"

हनुमान ने स्वयं से कहा।

ii. "तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं है, सुमुखी!"

रावण ने सीता से कहा।

iii. "सोच लो, तुम्हारे पास अब केवल दो महीने बचे हैं।"

रावण ने सीता से कहा।

iv. "ऐसा कभी नहीं होगा, दुष्ट! राम के सामने तुम्हारा अस्तित्व ही क्या है?"

सीता ने रावण से कहा।

v. "तुम्हें कोई नहीं बचा सकता मूर्ख राक्षस! तुम्हारा अंत निकट है।"

सीता ने रावण से कहा।

www.educationwithfun.com